क. जलप्रलय से पहले के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

- मानवजाति की प्रारंभिक पीढ़ियों में, शेत के वंशज परमेश्वर का नाम लेकर प्रार्थना करते थे, लेकिन कैन के वंशज ऐसा नहीं करते थे (उत्पत्ति 4:16, 26)। सातवीं पीढ़ी तक, इन दोनों समूहों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देने लगा था: लेमेक हिंसक और बहुविवाही था, जबकि हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था (उत्पत्ति 4:19, 23; उत्पत्ति 5:22)।
- उस समय से सब कुछ तेजी से बिगड़ने लगा। परमेश्वर के पुत्रों (शेत के वंशजों) ने मनुष्यों की पुत्रियों (कैन के वंशजों) के साथ विवाह किए और परमेश्वर से दूर होते गए, यहाँ तक कि "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्पत्ति 6:1-5)।
- इस कारण परमेश्वर ने पापी मानवजाति का नाश करने का निर्णय लिया (उत्पत्ति 6:6-7)। लेकिन ऐसा करने से पहले, उसने अपने भविष्यद्वक्ता नूह के द्वारा उन्हें पाप से फिरने और उद्धार पाने का अवसर दिया। नूह धार्मिकता का प्रचार करनेवाला था (उत्पत्ति 6:8, 11-14; 2 पतरस 2:5)।

ख. न्यायियों के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

- यहोशू और उसके बाद नेतृत्व करनेवाले वृद्ध लोगों की मृत्यु के बाद, इस्राएल के लोग भ्रष्ट हो गए और परमेश्वर को उनसे अपनी सुरक्षा हटा लेनी पड़ी (न्यायियों 2:7, 11-15)।
- उस समय के दौरान, परमेश्वर ने अपने लोगों की दो प्रकार से सहायता की: उसने उन्हें पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने हेतु भविष्यद्वक्ता भेजे (न्यायियों 6:8-10); और उन्हें बचाने के लिए न्यायियों को भेजा (न्यायियों 2:16)। दबोरा में ये दोनों भूमिकाएँ एक साथ दिखाई देती हैं (न्यायियों 4:4)।
- दबोरा ने सेनापति बाराक को परमेश्वर की आज्ञा सुनाई कि वह सीसरा को हराकर याबीन के हाथ से इस्राएल को छुड़ाए (न्यायियों 4:6-7)। सैनिक दृष्टि से यह असंभव था, लेकिन दबोरा ने यह सन्देश देने में संकोच नहीं किया। उसने बाराक को इस कार्य को स्वीकार करने और लोगों का नेतृत्व करने के लिए राजी किया (न्यायियों 4:8-10)।
- इस्राएल की शानदार विजय के बाद, दबोरा और बाराक ने लोगों का ध्यान सच्चे उद्धारकर्ता की ओर लगाया, उसी की ओर जिसने उन्हें विजय प्रदान की थी। ऐसा करने के लिए, उन्होंने मिलकर परमेश्वर की महान छुटकारे के लिए उसकी स्तुति में एक गीत गाया (न्यायियों 5:1-2)।

ग. राजाओं के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

- परमेश्वर के प्रयासों के बावजूद, न्यायियों का काल पाप में बार-बार गिरने की निरंतर प्रवृत्ति से चिह्नित था (न्यायियों 2:18-19)। दाऊद के राजवंश की स्थापना से ऐसा लगा कि इस प्रवृत्ति पर रोक लग गई है, लेकिन कुछ ही समय बाद इस्राएल विभाजित हो गया और उसके राजाओं ने (विशेषकर उत्तरी राज्य के राजाओं ने) लोगों को परमेश्वर से विमुख होने की ओर ले गए।
- राजा अहाब के समय में, एलिय्याह ही परमेश्वर का एकमात्र भविष्यद्वक्ता था, जबकि ईज़ेबेल बाल और अशेरा के 850 भविष्यद्वक्ताओं को समर्थन देती थी (1 राजा 18:19)।
- जब एलिय्याह ने लोगों से पश्चात्ताप करने के लिए कहा, तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया (1 राजा 18:21)। एक महान आश्चर्यकर्म के बाद, लोगों ने अंततः परमेश्वर को स्वीकार किया (1 राजा 18:39)।
- आज के एलिय्याह के समान, हमारा विशेष कार्य भी परमेश्वर को नकारनेवाली दुनिया को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाना है।

घ. निर्वासन के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

- परमेश्वर ने उत्तरी राज्य—इस्राएल—में अनेक भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, लेकिन उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया। अंततः, परमेश्वर को उन्हें अश्शूरियों के हाथों निर्वासन में जाने देना पड़ा (2 राजा 17:5-6)।
- दक्षिणी राज्य—यहूदा—कमोबेश परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा था, लेकिन अपने पापों के कारण उन्हें भी बाबुल में निर्वासन में जाना पड़ा (2 इतिहास 36:20)।
- न्यायियों के काल में राष्ट्रीय स्तर पर परमेश्वर से विमुख होने की शुरुआत से लेकर बाबुल के निर्वासन तक, आठ शताब्दियाँ बीत गईं। पापी के प्रति परमेश्वर कितना धैर्यवान है! (नहेम्याह 9:30)।
- लेकिन निर्वासन में भी परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला। वहाँ भी उसने यहेजकेल और दानिय्येल जैसे भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। जब लोग परमेश्वर की ओर लौटे, तो वह उन्हें वापस यरूशलेम ले आया (2 इतिहास 36:22-23)।

ङ. अन्तिम समय के लिए भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

- यीशु ने यूहन्ना पर इस्राएल के लोगों के उत्तराधिकारी, अर्थात् परमेश्वर के चुने हुए लोगों—मसीही कलीसिया—का इतिहास प्रकट किया (प्रकाशितवाक्य 1:1)। यह इतिहास एक ऐसी कलीसिया को दिखाता है, जिसने इस्राएल के समान परमेश्वर से विमुख होने का मार्ग अपनाया, और साथ ही उन विश्वासियों के समूह को भी दिखाता है जो अन्तिम समय तक विश्वासयोग्य बने रहेंगे।
- न्याय और विनाश के दर्शनों के बीच-बीच में, प्रकाशितवाक्य हमें आशा के वचन देता है, ताकि परमेश्वर के बेटे-बेटियों को विश्वासयोग्य बने रहने का प्रोत्साहन मिले।
- यूहन्ना ने लिखा कि जब यीशु वापस आएगा, तब जय पानेवालों को नए यरूशलेम में स्थान मिलेगा, जो नई पृथ्वी की राजधानी होगी। वहाँ हम बीमारी, मृत्यु या पीड़ा के बिना अनन्तकाल तक जीवित रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:1-7)।
- इन अन्तिम दिनों में, परमेश्वर ने आनेवाली घटनाओं के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाने और हमारे मसीही जीवन में हमारी सहायता करने तथा मार्गदर्शन देने के लिए एक भविष्यद्वक्त्री को भी भेजा है।

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट का ऐतिहासिक विकास

एलेन जी. व्हाइट की भविष्यद्वाणी की सेवकाई 60 से अधिक वर्षों तक चली। उनके माध्यम से परमेश्वर ने विभिन्न दर्शन और सन्देश दिए, जो नवगठित सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया की उभरती आवश्यकताओं के अनुसार धीरे-धीरे बदलते गए।

- 1844-1863. बड़ी निराशा के बाद उन्होंने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें सांत्वना दी।
- ± 1863-1869. उन्होंने स्वास्थ्य सुधार को बढ़ावा दिया।
- ± 1870-1879. उन्होंने एडवेंटिस्ट शिक्षा प्रणाली के विकास में सहायता की।
- ± 1880-1900. उन्होंने धर्मी ठहराए जाने के विषय में एडवेंटिस्ट धर्मविज्ञान में संतुलन स्थापित किया।
- ± 1901-1903. उन्होंने संप्रदाय की संगठनात्मक संरचना के पुनर्गठन में भाग लिया।